भाषा और साक्षरता

आनंद के लिए पढ़ना

भारत में विद्यालय आधारित
समर्थन के माध्यम से
शिक्षक शिक्षा
www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के विद्यार्थी –केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को विद्यालय की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने विद्यार्थियों के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)* । मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त- पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL06v1
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन- शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है.
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई पठन के लिए आपके छात्र–छात्राओं का उत्साह बढ़ाने में आपकी भूमिका पर केंद्रित है। छात्र–छात्राओं को पढ़ने में जितना ज्यादा मज़ा आता है, वे उतना ही ज्यादा पढ़ना चाहते हैं। उन्हें पढ़ने के जितने ज्यादा अवसर मिलेंगे, वे पठन में उतने ही बेहतर होते जाएँगे। यह एक अच्छा चक्र है।

पढ़ने वाले एक शिक्षक/शिक्षिका और अध्यापन करने वाले एक पाठक/पाठिका के रूप में, आप एक महत्त्वपूर्ण रोल मॉडल हैं और आप अपने छात्र–छात्राओं को पढ़ने के आनंद के प्रति प्रेरित कर सकते हैं।

इस इकाई में आपका परिचय उन कक्षा अभ्यासों से होगा जो आपके छात्र–छात्राओं में पढ़ने के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करेंगे, ताकि उनमें पढ़ने की 'इच्छा' और पढ़ने का 'कौशल' विकसित हो।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- अपने छात्र–छात्राओं के लिए एक पठन रोल मॉडल कैसे बनें।
- पठन के लिए अपने छात्र–छात्राओं के आनंद को विकसित करने वाली गतिविधियों की योजना कैसे बनाएँ।
- छात्र–छात्राओं की सहपाठी सहायता और सहयोगी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के लिए जोड़ियों में पठन का आयोजन कैसे करें।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्त्वपूर्ण है

एक पाठक होने के कई लाभ हैं। पठन मानसिक रूप से प्रेरक होता है। इससे ज्ञान, जागरुकता और समझ बढ़ती है। इससे सुनने और बोलने का कौशल बढ़ता है, और यह अच्छी तरह लिखने की क्षमता पर भी प्रभाव डालता है। जो छात्र–छात्रा अच्छी तरह पढ़ना नहीं सीखते, उन्हें उनके लिए उपलब्ध सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के अवसरों से जुड़ने में भी कठिनाई होती है और इस बात का जोखिम भी रहता है कि वे पीछे न छूट जाएँ।

यदि हमें किसी विशिष्ट गतिविधि में आनंद मिलता है, तो हम उसे बार-बार करने के मौके ढूँढेंगे। हम उस गतिविधि में जितना ज्यादा शामिल होते हैं, हम उसमें उतने ही बेहतर होते जाते हैं। यह बात पठन पर भी उतनी ही अच्छी तरह लागू होती है। अपने छात्र–छात्राओं को एक आनंददायक तरीके से पढ़ने का अनुभव लेने के ज्यादा से ज्यादा अवसर देकर, आप उन्हें आत्मविश्वासी, आजीवन पाठक बनने की राह पर आगे बढ़ा सकते हैं।

1 एक रोल मॉडल बनना

पठन के प्रति छात्र–छात्राओं के दृष्टिकोण पर उनके शिक्षकों का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस इकाई में ऐसे कई तरीकों के बारे में सुझाव दिया गया है, जिनके द्वारा आप पाठ की एक व्यापक श्रेणी को पढ़ने से मिलने वाले आनंद का नमूना स्पष्ट रूप से दिखा सकते हैं।

सबसे पहले आप एक ऐसी शिक्षिका का केस स्टडी पढ़ेंगे, जिन्होंने पठन के आनंद से अपने छात्र–छात्राओं का परिचय करवाने का एक तरीका ढूँढा।

केस स्टडी 1: अखबार पढ़ना

सुश्री अनीता पटना में कक्षा तीन से पाँच के छात्र–छात्राओं वाले एक बड़े बहुवर्गीय समूह की शिक्षिका हैं। यहाँ वे वर्णन करती हैं कि किस तरह उन्होंने अपनी कक्षा में पठन के आनंद का प्रदर्शन करने के लिए अख़बार का उपयोग किया।

दुर्भाग्य से पारिवारिक जिम्मेदारियों और काम के कारण मुझे अपनी इच्छानुसार पढ़ने का समय नहीं मिल पाता। इसके बावजूद भी मेरे लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि मैं अपने छात्र–छात्राओं को पठन के महत्त्व और आनंद को समझना सिखाऊँ।

इस साल की शुरुआत में एक दिन मेरे छात्र–छात्रा जब कक्षा में आए, तो मैं एक दैनिक अखबार में एक खबर पढ़ रही थी

[टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 2014]। जब वे लोग आकर बैठ गए, तो मैंने अखबार नीचे रख दिया और उनसे कहा, 'मैं अभी-अभी सबसे रोचक चीज़ के बारे में पढ़ रही थी! यह खबर भारत के सबसे बड़े फेयरी व्हील (बड़ा चक्राकार झूला) "दिल्ली आय" (Delhi Eye) के बारे में है!'

मैंने उन्हें उस विशाल झूले का एक चित्र दिखाया और अपनी बात जारी रखी: 'इसमें लिखा है कि यहाँ हम ऊपर से कुतुबमीनार, लाल किला, अक्षरधाम मंदिर, लोटस टेम्पल और हुमायूँ का मकबरा जैसे स्मारक देख सकते हैं।' मेरे छात्र–छात्रा इस खबर से बहुत आकर्षित हुए।

मैंने उन्हें समझाया कि अखबार में पढ़ने के लिए बहुत सारी रोचक बातें होती हैं। मैंने अपने छात्र–छात्राओं से पूछा कि विद्यालय के बाहर वे कितनी बार अखबार देखते हैं। एक या दो छात्र–छात्राओं ने कहा कि उन्होंने अपनी दुकान में चित्रों और बड़े अक्षरों में लिखी हेडिंग वाले अखबार देखे हैं। एक अन्य छात्र ने कहा कि उसके पिता हर दिन अखबार पढ़ने सामुदायिक भवन में जाते हैं। इस चर्चा के द्वारा मुझे अपने छात्र–छात्राओं के बारे में थोड़ी ज्यादा जानकारी मिली।

उसके बाद से मैं हर सुबह अपने छात्र–छात्राओं को अख़बार की कोई एक खबर बताने लगी। उनकी रुचि वाली कोई खबर चुनने से पहले हर बार मैं ध्यान रखती थी कि वे मुझे पन्ने पलटाते हुए देखें। यह मेरे लिए भी आनंददायक था, क्योंकि इससे मुझे हर दिन अखबार पढ़ने का मौका मिलता था। मेरे छात्र–छात्राओं को भी दैनिक या अंतर्राष्ट्रीय ख़बरों के बारे में जानने की उत्सुकता रहती थी। एक संक्षिप्त चर्चा के बाद मैं समाचारों को मेरे छात्र–छात्राओं के ज्ञान और अनुभव के साथ जोड़ पाने में सक्षम हो गई, और साथ ही मैंने उनका परिचय अख़बारों की नई भाषा से भी करवाया।

जल्दी ही मेरी कक्षा में अख़बारों और पत्रिकाओं का ढेर लग गया था, और मैंने अपने छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित किया कि सुबह अपने सहपाठियों के आने की प्रतीक्षा करते समय वे इन्हें देखें। कुछ समय बाद मैंने तय किया कि मैं हर दिन अपनी कक्षा में छात्र–छात्राओं को ये अखबारों को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दूँगी। कुछ छात्र–छात्रा अकेले पढ़ते थे। कुछ साथ मिलकर पढ़ते थे। कुछ अवसरों पर मैंने सुना कि साथ में पढ़ने वाले छात्र उसी तरह की अभिव्यक्तियों का उपयोग कर रहे थे, जैसा मैं उनके साथ करती थी, जैसे 'ओह, ये कितना रोचक है!' और 'आओ देखें इसमें क्या लिखा है!' कभी-कभी मैं बड़े छात्र–छात्राओं से कहती थी कि वे छोटे छात्र–छात्राओं के साथ पढ़ें। कभी-कभार मैंने उन्हें किसी विशिष्ट शब्द का अर्थ समझाते हुए भी सुना। हाल ही में, मेरे छात्र–छात्राओं ने एक-दूसरे को लेख सुझाना भी शुरू किया है और वे इस तरह की अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं, 'क्या तुमने यह पढ़ा है?' इस संक्षिप्त सत्र में मैं अपने छात्र–छात्राओं की पठन रुचियों और कौशलों का अनौपचारिक अवलोकन कर सकी।

ज़रा सोचिये

- सुश्री अनीता की अख़बार गतिविधि से उनके छात्र–छात्राओं ने पठन के बारे में क्या सीखा?
- उनके तरीके के लाभ क्या हैं? क्या इसमें कोई संभावित कमियाँ हैं?
- उनके कौन-से तरीके आप अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं?

सुश्री अनीता ने अपने छात्र–छात्राओं को अखबार पढ़ने की एक गतिविधि का नमूना दिखाया। उन्होंने उन्हें दिखाया कि वे किस तरह इसकी सामग्री में से उन समाचारों का चयन करके उन्हें दिखाती थी, जो उन्हें छात्र–छात्राओं के लिए सबसे ज्यादा रोचक प्रतीत होते थे और उन्हें उनके दृष्टिकोण व संबंधित अनुभवों के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित करती थी।

हर दिन पढ़ने के लिए थोड़ा समय अलग रखकर, सुश्री अनीता ने अपने छात्र–छात्राओं को नियमित रूप से यह गतिविधि करने का महत्त्व समझाया। अपने छात्र–छात्राओं के लिए अखबार और पत्रिकाएँ उपलब्ध करवाकर उन्होंने छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी रुचि की सामग्री चुनें और अपना चयन अपने सहपाठियों के साथ साझा करें। उन्हें बोलकर पढ़ने, चुपचाप पढ़ने या जोड़ियों में बैठकर पढ़ने की जगह देकर, उन्होंने हर छात्र को अपने स्तर पर इस गतिविधि से जुड़ने

की क्षमता दी। छोटे छात्र–छात्राओं को पढ़कर सुनाने के लिए बड़े छात्र–छात्राओं को आमंत्रित करके उन्होंने बड़े छात्र–छात्राओं के पठन कौशल की जांच की।

इस गतिविधि की एक कमी यह है कि ज्यादातर अखबारों और पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए एक न्यूनतम पठन कौशल आवश्यक होता है, ताकि हम उनसे जुड़ सकें, यहाँ तक कि बुनियादी स्तर पर भी। इसी तरह, कई समाचार सामग्रियों के लिए ऐसे ज्ञान और समझ की ज़रूरत होती है, जो शुरुआत प्राथमिक कक्षाओं के छात्र–छात्राओं में होना अपेक्षित नहीं है। इसलिए यह गतिविधि छोटे छात्र–छात्राओं या बहुत शुरुआती पाठकों के लिए उपयुक्त नहीं है।

आपके छात्र–छात्राओं का स्तर चाहे जो भी हो, लेकिन उन्हें पठन का कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होगा। चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक, लेकिन उनके मन में पठन के प्रति कोई न कोई दृष्टिकोण भी अवश्य होगा, जो कि विद्यालय में, घर पर या उनके समुदाय में ऐसे अनुभवों पर आधारित होगा। आपके छात्र–छात्राओं के लिए किस तरह की नियमित पठन गतिविधि कारगर होगी? आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर छात्र–छात्रा को शामिल किया गया है? अपने विचारों के बारे में अपने सहकर्मी के साथ चर्चा करें।

अगले अनुभाग में, आप कक्षा में 'पुस्तक पर बात' के महत्त्व के बारे में जानेंगे। यह एक नियमित गतिविधि है, जिसे आप अपने किसी भी पाठ में शामिल कर सकते हैं।

2 पुस्तक पर बात

ज़रा सोचिये

- आपने ऐसा क्या पढ़ा था, जो बहुत उत्कृष्ट था और जिसे आप अपने किसी मित्र को सुनाएँगे?
- आपने क्या पढ़ना शुरू किया था, जिसे आपने ऊबाऊ या कठिन होने के कारण बीच में ही छोड़ दिया?
- क्या पढ़ने के बारे में आपकी कोई विशिष्ट पसंद या नापसंद है?

इस तरह के प्रश्न 'पुस्तक पर बात' को प्रोत्साहन देते हैं। आपके सभी उत्तर एक पाठक होने के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं। अगले केस स्टडी में आप देखेंगे कि किस तरह एक शिक्षिका पुस्तक पर बात को अपने पाठ में शामिल करती हैं।

केस स्टडी 2: कक्षा में पुस्तक पर बात को प्रोत्साहित करना

श्रीमती रचना, आरा में कक्षा आठ की शिक्षिका हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि उन्होंने किस तरह अपने छात्र–छात्राओं में पुस्तक पर बात को प्रोत्साहित किया।

पिछले वर्ष तक, मेरे नियमित सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में अपनी कक्षा को एक पाठ पढ़कर सुनाना और अपने छात्र–छात्राओं से पाठ्यपुस्तक में उसके लिए दिए गए प्रश्न पूरे करने को कहना शामिल था। अपने स्थानीय DIET में एक कार्यशाला के बाद, मैंने तय किया कि यदि मैं अपने छात्र–छात्राओं को पठन के प्रति ज्यादा विवेकशील बनाना चाहती हूँ, तो मुझे अपनी प्रक्रिया में परिवर्तन करना होगा।

मैंने सबसे पहले अपनी कक्षा को पढ़कर सुनाने के लिए एक कहानी चुनी। यह SCERT की कक्षा आठ की पाठ्यपुस्तक की कहानी 'खेमा' थी *और इस तरह बात बन गई*। जब मैंने पूरी कहानी पढ़ ली, तो मैंने इसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया इस तरह दी: 'मुझे यह कहानी बहुत दुखद लगती है, क्योंकि मुझे बाल श्रमिकों के बारे में पढ़ना पसंद नहीं है। हालाँकि, उस बच्चे 'खेमा' के लिए यह एक अच्छा रोमांच है। न जाने उसका क्या होगा; आपका क्या विचार है?'

इसके बाद मैंने अपने छात्र–छात्राओं से कहा कि वे दो मिनट तक अपने साथी के साथ इस कहानी के बारे में बात करें। मैंने उन्हें इस तरह के प्रश्नों के साथ संकेत दिया कि 'आपको क्या अच्छा लगा?', 'आपको क्या अच्छा नहीं लगा?' और 'आपको क्या कठिन लगा?' अंत में, मैंने हर छात्र को कहानी के बारे में उनकी प्रतिक्रिया कक्षा को बताने के लिए आमंत्रित किया।

पहले पहल, मेरे छात्र–छात्राओं को कहानियों पर अपनी प्रतिक्रिया देने में कठिनाई महसूस हुई, क्योंकि उन्हें इस तरह पाठ के प्रति अपनी राय और प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आदत नहीं थी। हालाँकि, इस तरह की गतिविधि को कई काल्पनिक और कथेतर पठन पाठ के साथ दोहराने के बाद वे अपनी राय साझा करने के प्रति ज्यादा सहज हो गए। अब वे न सिर्फ आत्मविश्वास के साथ यह कह देते हैं कि उन्हें पाठ अच्छा नहीं लगा, बल्कि वे इसका कारण भी समझा सकते हैं। वे अब पाठ पर चर्चा करते समय अपने पुराने ज्ञान का भी उपयोग करने लगे हैं और वे पाठ को अपने खुद के अनुभवों और साथ ही उन्होंने पहले जिन पाठ के बारे में बात और चर्चा की थी, उनसे जोड़ने लगे हैं। जब मेरे छात्र–छात्रा खुलकर पाठ के बारे में इस तरह बात करते हैं, तो मैं उनकी समझ का मूल्यांकन विस्तार से कर सकती हूँ, जो कि केवल पाठ्यपुस्तक के अभ्यास से संभव नहीं है।

हालाँकि मैंने एक मार्गदर्शक के रूप में पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों का उपयोग जारी रखा है, लेकिन हम कक्षा में जो कुछ भी पढ़ते हैं, उस पर ज्यादा खुलकर चर्चा करने की हमेशा अनुमति देते हैं।

ज़रा सोचिये

- आपके अनुसार कक्षा में पुस्तक पर बात करके श्रीमती रचना के छात्र–छात्रा क्या सीख रहे हैं?
- इस सत्र में छात्र–छात्राओं की निगरानी करने से वे उनके पठन विकास के बारे में क्या सीख रही हैं?

पठन की समझ एकाएक विकसित नहीं होती; यह सिखाई जानी चाहिए। यह सर्वश्रेष्ठ ढंग से तब पूरी होती है, जब शिक्षक/शिक्षिका अपने विचारों को व्यक्त करके और पाठ के अर्थ के बारे में अपने छात्र–छात्राओं से चर्चा करके इस अवधारणा प्रक्रिया का नमूना प्रस्तुत करते हैं।

छात्र–छात्राओं ने खुद जो पाठ सुना या पढ़ा है, जब उन्हें उसके बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो उनमें आत्मविश्वास विकसित होता है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं और व्याख्याओं के बारे में बात कर सकें।

वयस्क होने के कारण, आमतौर पर हम स्वयं चुन सकते हैं कि हमें क्या पढ़ना है। अक्सर हम विशिष्ट तरह के पाठ को अन्य पाठ की तुलना में ज्यादा पसंद करते हैं। हम अपने पठन को प्रदर्शित करते हैं और दूसरों के साथ इस पर चर्चा करते हैं। हमें

अपने छात्र–छात्राओं को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए - कि वे उनकी पसंद की किताबें चुनें और वे जो भी पढ़ते हैं, उस पर बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया दें।

गतिविधि 1: पुस्तक पर बात का सत्र

चित्र 1: कक्षा में एक पुस्तक के बारे में बात करना।

अपनी कक्षा में पुस्तक पर बात करने के लिए एक संक्षिप्त सत्र की योजना बनाएँ। यह 30 मिनट से ज्यादा समय का नहीं होनी चाहिए।

एक छोटा-सा काल्पनिक या कथेतर पाठ चुनें। यह कोई कहानी, अखबार का कोई तथ्यात्मक लेख, किसी नाटक की पटकथा या कोई कविता हो सकती है। आप चाहे जो भी पाठ चुनते हैं, सबसे पहले उसमें अपरिचित शब्दावली का अनुमान लगा लें। शुरू में ही विषय का परिचय देने और यदि कोई अज्ञात शब्द हैं, तो उनका अर्थ समझाने से आप अपने छात्र–छात्राओं की परेशानी को कम करने में मदद करेंगे और आगे जो आने वाला है, उसे समझने में उन्हें इससे सहायता मिलेगी।

पाठ पढ़कर सुनाने के बाद, संक्षेप में अपने छात्र–छात्राओं को बताएँ कि इसके बारे में आपकी क्या राय है और इसे पढ़कर आपके मन में क्या विचार आए। हालाँकि इस तरह पुस्तक पर बात का मॉडल प्रस्तुत करना महत्त्वपूर्ण है, लेकिन शुरुआत में इसे ध्यानपूर्वक करना सर्वोत्तम होता है, ताकि आप उस पाठ के बारे में अपने छात्र–छात्राओं की राय को बहुत ज्यादा प्रभावित न कर दें। इसके बाद अपने छात्र–छात्राओं को अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए आमंत्रित करने हेतु उनसे पूछें (उदाहरण के लिए):

- उन्हें पाठ के बारे में क्या अच्छा लगा या क्या नहीं लगा
- पात्रों के बारे में उनके क्या विचार हैं
- क्या इसमें कुछ ऐसा था, जिसे समझना कठिन हो
- क्या वे किसी और को इसे पढ़ने का सुझाव देंगे।

अपने छात्र–छात्राओं की सभी प्रतिक्रियाओं के प्रति रुचि दर्शाएँ।

यदि आपकी कक्षा बड़ी है, तो हर दिन छात्र–छात्राओं के अलग अलग समूह के साथ पुस्तक पर बात के सत्र की योजना बनाएँ। जब आप इस छोटे समूह के साथ समय बिता रहे हों, तब शेष कक्षा को पुस्तक पर बात के पठन से संबंधित कोई स्वतंत्र कार्य करने को दें। कक्षा को छात्र–छात्राओं के स्तर के अनुसार बाँटकर, आप प्रत्येक समूह के लिए उपयुक्त पाठ का चयन कर सकते हैं।

पुस्तक पर बात के सत्र केवल उस पाठ तक सीमित नहीं होने चाहिए, जो आप अपने छात्र–छात्राओं को पढ़कर सुनाते हैं, बल्कि इनका विस्तार करके उन पाठ को भी शामिल किया जा सकता है, जिन्हें छात्र स्वयं पढ़ते हैं।

इस चरण में मुख्य संसाधन 'सीखने के लिए बातचीत' पढ़ना आपके लिए मददगार हो सकता है।

वीडियो: सीखने के लिए बातचीत

गतिविधि 2: छात्र–छात्राओं की पुस्तक समीक्षाएँ

आप पुस्तक पर बात के सत्र का विस्तार करने के लिए अपने छात्र–छात्राओं से कह सकते हैं कि उन्होंने जो पढ़ा है, उस पर वे एक संक्षिप्त समीक्षा लिखें। चित्र 2 में दिए गए पुस्तक समीक्षा टेम्पलेट को आप अपनी इच्छानुसार परिवर्तित कर सकते हैं। जैसा कि कक्षा की चर्चाओं में होता है, अपने छात्र–छात्राओं द्वारा इन समीक्षाओं में व्यक्त किए गए सभी विचारों को स्वीकार किया जाना चाहिए और महत्त्व दिया जाना चाहिए।

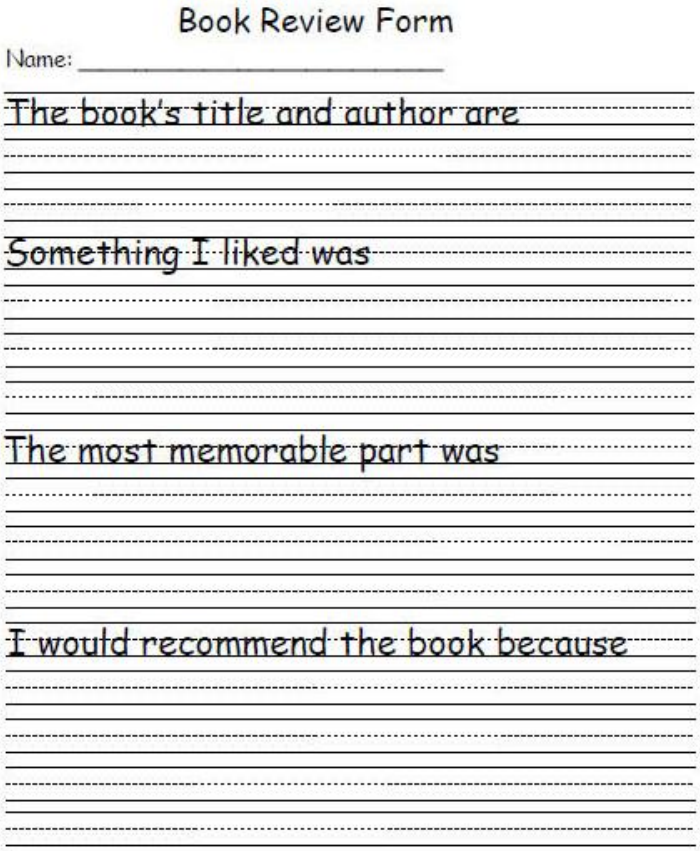
Book Review Form

Name: _____

The book's title and author are

Something I liked was

The most memorable part was

I would recommend the book because

चित्र 2: पुस्तक समीक्षा टेम्पलेट। (स्रोत: एजुकेशन वर्ल्ड, दिनांक नहीं)

अगले अनुभाग में, आप समझ और आनंद में सहायता के लिए जोड़ियों में पठन के अभ्यास को देखेंगे।

3 जोड़ियों में पठन

अकेले पढ़ने की तुलना में साथ मिलकर पढ़ना ज्यादा लाभदायक हो सकता है, और यह मज़ेदार भी हो सकता है।

जोड़ियों में पठन से एक सहायक, सहयोगी सीखने–सिखाने की प्रक्रिया की संरचना मिलती है, जो तब आदर्श होती है, जब एक छात्र दूसरे छात्र जितना आत्मविश्वासी पाठक नहीं है। छात्र एक दूसरे के लिए बहुत सक्षम और संवेदनशील 'शिक्षक/शिक्षिका' हो सकते हैं। अपने छात्र–छात्राओं को इस प्रकार व्यवस्थित करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1, 'जोड़े में कार्य का उपयोग करना' पढ़ें।

वीडियो: जोड़े में कार्य का उपयोग करना

जोड़ियों में कार्य के द्वारा, दो छात्र एक पुस्तक को साझा करते हैं और बारी-बारी से एक-एक वाक्य, अनुच्छेद या पृष्ठ पढ़ते हैं (चित्र 3)। पहला पाठक पढ़ता है, जबकि दूसरा पाठक उसे सुनता है और साथ-साथ बढ़ता है। जहाँ पहला पाठक रुकता है, दूसरा पाठक उसके आगे से पढ़ना जारी रखता है। यदि दोनों में से किसी को भी कठिनाई होती है या वे गलती करते हैं, तो उनका साथी उनकी सहायता कर सकता है या उनकी गलती सुधार सकता है।

चित्र 3: जोड़ियों में पठन।

आप समान पठन क्षमता वाले छात्र–छात्राओं की जोड़ी बना सकते हैं या आप अधिक वाक्पटु छात्र–छात्राओं की कम वाक्पटु छात्र–छात्राओं के साथ, या बहुवर्गीय कक्षा में बड़े छात्र–छात्राओं की छोटे छात्र–छात्राओं के साथ जोड़ी बना सकते हैं। यदि जोड़ियों में पठन सुनियोजित हो, तो इसका उपयोग छात्र–छात्राओं की बड़ी संख्या के साथ किया जा सकता है।

अब एक शिक्षक का केस स्टडी पढ़ें, जो द्विभाषी छात्र–छात्राओं के लिए जोड़ियों में पठन के लाभों को जानते हैं।

केस स्टडी 3: द्विभाषी पठन सहायता के लिए जोड़ियों में कार्य

श्री राकेश बिहार के एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा पाँच को पढ़ाते हैं।

मेरे कुछ छात्र उनके घर की भाषा के रूप में मगही बोलते हैं। वे विद्यालय में हिन्दी समझने और बोलने में लगातार प्रगति कर रहे हैं, लेकिन उनमें ऊँची आवाज़ में पढ़ने का आत्मविश्वास नहीं है। मैंने देखा कि मेरी एक छात्रा सुनीता कक्षा में पुस्तकों को देखा करती थी। ऐसा लगता था कि वह चित्रों में खो जाती थी, लेकिन प्रतीत होता था कि वह पृष्ठ पर लिखे शब्दों को नहीं समझती है।

एक दिन, जब वह पुस्तक देख रही थी, तो मैं उसके पास बैठ गया और उससे पूछा कि वह कहानी किस बारे में है। वह मेरा प्रश्न समझ गई, लेकिन उत्तर देने में उसे कठिनाई महसूस हुई। इसलिए मैंने उसके साथ पुस्तक का कुछ भाग पढ़ा और ऐसा करते समय शब्दों और चित्रों की ओर संकेत करता गया। मैंने उससे कुछ सरल प्रश्न पूछे और वह मगही व हिन्दी को मिलाकर उत्तर देती रही।

मेरे मन में विचार आया कि मगही और हिन्दी बोलने वाले बड़ी उम्र के एक छात्र से सुनीता को पुस्तक पढ़कर सुनाने को कहा जाए। ऐसा करते समय वह सुनीता के घर की भाषा में उसे अर्थ भी समझाता जा रहा था। सुनीता ने ध्यान से सुना और उसके प्रश्नों का उत्तर मगही मिश्रित हिंदी में दिया।

मैंने आकर्षक चित्रों वाली ऐसी और भी किताबें ढूँढी, जिनके बारे में मुझे लगा कि वे सुनीता को पसंद आएंगी। मुझे एक ऐसी किताब मिली, जिसमें प्रसिद्ध लोक कथाएँ शामिल थीं और बार-बार आने वाले वाक्यांशों वाला एक सरल रीडर था। मैंने एक सहकर्मी से उन कहानियों का मगही में अनुवाद करने को कहा ताकि सुनीता उन्हें हिन्दी और उसके घर की भाषा दोनों में लिखा हुआ देख सके। धीरे-धीरे सुनीता हिन्दी से परिचित होती गई और इन पुस्तकों को ज्यादा अच्छी तरह समझने लगी। अब वह ज्यादा लंबे वाक्यों वाली कुछ ज्यादा कठिन किताबें पढ़ने लगी है। उसकी प्रगति को देखकर बहुत संतोष होता है।

ज़रा सोचिये

- क्या आपको लगता है कि विद्यालय में अपने घर की भाषा को मिलाना छात्र–छात्राओं के लिए सही है? क्यों या क्यों नहीं?
- मगही जानने वाले एक छात्र के साथ जोड़ी में पठन से सुनीता को क्यों लाभ हुआ?

हम एक विविधतापूर्ण, बहुभाषी समाज में रहते हैं, जहाँ सभी भाषाएँ मूल्यवान संसाधन हैं। अपने छात्र–छात्राओं को उनके घर की भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने से उन्हें विद्यालय में आत्मविश्वासी और सहज महसूस करने में मदद मिल सकती है, और इससे उन्हें अपनी हिन्दी सुधारने में मदद मिल सकती है। भले ही आप वह भाषा न बोलते हों, जो आपके छात्र–छात्राओं के घर की भाषा है, लेकिन विद्यालय में ऐसे कुछ छात्र हो सकते हैं, जो दूसरों की मदद कर सकें। जिन छात्र–छात्राओं के घर की भाषा एक ही है, उन्हें जोड़ियों में या छोटे समूहों में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। इस तरह वे विद्यालय की भाषा के विकास में सहायता करने के लिए उनके घर की भाषा का उपयोग करके एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।

अगली गतिविधि इस तरह तैयार की गई है, ताकि आपको अपनी कक्षा में जोड़ियों में पठन का उपयोग शामिल करने में मदद मिले।

गतिविधि 3: जोड़ियों में पठन का परिचय देना और आयोजन करना

यह गतिविधि जोड़ियों में या तीन या चार के छोटे समूहों में की जा सकती है। पहले से ही यह तय कर लें कि आप किन छात्र–छात्राओं की जोड़ियाँ या समूह बनाना चाहते हैं। क्या उनका चयन क्षमताओं में समानता के आधार पर किया जाएगा या अंतर के आधार पर? चुनें कि छात्र क्या पढ़ेंगे, और सुनिश्चित करें कि आपके पास उस पाठ की पर्याप्त प्रतियाँ हों।

सबसे पहले जोड़ियों में पठन का नमूना दें, ताकि आपके छात्र–छात्रा जान जाएँ कि आप उनसे क्या करने की अपेक्षा रखते हैं। छात्र–छात्राओं को वह पुस्तक - या पैराग्राफ - दिखाएँ, जो उन्हें पढ़ना है और उनमें से एक को अपना पार्टनर बनने के लिए चुनें। यह समझाएँ कि सबसे पहले आप साथ मिलकर एक अनुच्छेद पढ़कर सुनाएँगे और इसके बाद पठन जारी रखने के लिए बारी-बारी से पढ़ेंगे। सबसे पहले एक साथ पहला पैराग्राफ पढ़ें। इसके बाद छात्र–छात्राओं को अगला पैराग्राफ पढ़ना जारी रखने दें। इसके बाद फिर बदलें और अगला पैराग्राफ खुद पढ़ें। इस तरह कई बार बारी-बारी से पढ़ते जाएँ।

अब पहले छात्र के साथ जोड़ी बनाने के लिए एक अन्य छात्र को चुनें और उन्हें यह प्रदर्शित करने दें कि किस तरह जोड़ियों में साथ मिलकर पढ़ना है। यदि आपकी योजना बड़े समूह बनाने की है, तो तीसरे या चौथे छात्र को भी इसमें जुड़ने को कहें।

अपने छात्र–छात्राओं को बताएँ कि यदि उनका साथी या समूह का सदस्य कोई कठिनाई महसूस करता है, तो उसकी मदद करने से पहले उन्हें कुछ समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, ताकि उसे समस्या को सुलझाने का अवसर मिल सके। उन्हें

समझाएँ कि पूरा उत्तर बता देने के बजाय उस छात्र को कोई संकेत देना - जैसे शब्द की पहली ध्वनि - बेहतर होता है।

शुरू में, जोड़ियों में पठन कुल दस मिनट का होना चाहिए, और जब आपके छात्र इस गतिविधि से परिचित हो जाते हैं, तो धीरे-धीरे इसे अधिकतम 30 मिनट तक बढ़ाया जा सकता है। अपने छात्र–छात्राओं से कहें कि वे धीमी आवाज़ में एक-दूसरे को पढ़कर सुनाएँ, ताकि इससे उनके सहपाठियों को परेशानी न हो।

कक्षा में घूमकर देखें और ध्यानपूर्वक सुनकर यह पता करें कि क्या आपके छात्र इस गतिविधि को समझ गए हैं। जिन्हें पढ़ने में कठिनाई आ रही हो, उनकी सहायता करें। इस बात को दर्ज करें कि किन छात्र–छात्राओं ने एक साथ काम किया है, और इसका अवलोकन करें कि वे ऐसा कितनी अच्छी तरह कर पाते हैं। कुछ छात्र एक-दूसरे के साथ विशिष्ट रूप से उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन समय-समय पर जोड़ियों या समूहों में बदलाव करना भी मददगार हो सकता है।

इस गतिविधि के बाद, अपने छात्र–छात्राओं से पूछें कि क्या उन्हें इस गतिविधि में मज़ा आया और यह उन्हें उपयोगी लगी या नहीं। एक दूसरे की मदद करने के लिए उनकी तारीफ़ करें। जोड़ियों में पठन के बाद आप पाठ के बारे में पुस्तक पर बात का एक संक्षिप्त सत्र भी आयोजित कर सकते हैं।

4 सारांश

यह इकाई विद्यालय में और विद्यालय के बाहर पाठ की अनेक श्रेणियों के उत्साही, आत्मविश्वासी और चिंतनशील पाठक बनने में आपके छात्र–छात्राओं को सक्षम बनाने में आपकी भूमिका पर केंद्रित थी। आनंददायक पठन का नमूना प्रस्तुत करने में आपकी भूमिका इस गतिविधि में छात्र–छात्राओं की सकारात्मक सहभागिता के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इस इकाई में ऐसी कई गतिविधियों का सुझाव दिया गया है, जिनका उपयोग आप कक्षा में पठन कौशल के विकास के लिए कर सकते हैं। इनमें पुस्तक पर चर्चा शामिल है, जिससे छात्र–छात्राओं को अपने पठन के बारे में अपनी प्रतिक्रिया साझा करने का अवसर मिलता है और साथ ही इसमें जोड़ियों में पठन शामिल है, जहाँ छात्र साथ मिलकर कुछ पढ़ने के बाद उस पर एक-दूसरे से चर्चा कर सकते हैं। जैसा कि कई गतिविधियों के साथ होता है, पठन एक कौशल है, जो अभ्यास के द्वारा सुधरता जाता है और आपके छात्र जो भी पाठ पढ़ते हैं, यदि उन्हें उसे पढ़ने और उसके बारे में बात करने में मज़ा आता है, तो इस बात की ज्यादा संभावना है कि वे इसका अभ्यास करेंगे।

संसाधन

संसाधन 1: जोड़े में कार्य का उपयोग करना

रोज़ाना लोग काम करते हैं, और साथ-साथ दूसरो से बोलते हैं और उनकी बात सुनते हैं तथा देखते हैं कि वे क्या करते हैं और कैसे करते हैं। लोग इसी तरह से सीखते हैं। जब हम दूसरों से बात करते हैं तो हमें नए विचारों और जानकारियों का पता चलता है। कक्षाओं में अगर सब कुछ शिक्षक/शिक्षिका पर केंद्रित होता है तो अधिकतर छात्र–छात्राओं को अपनी पढ़ाई को प्रदर्शित करने के लिए या प्रश्न पूछने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। कुछ छात्र केवल संक्षिप्त उत्तर दे सकते हैं और कुछ बिल्कुल भी नहीं बोल सकते। बड़ी कक्षाओं में, स्थिति और भी बदतर है, जहाँ बहुत कम छात्र–छात्रा ही कुछ बोलते हैं।

जोड़े में कार्य का उपयोग क्यों करें?

जोड़े में कार्य छात्र–छात्राओं के लिए ज्यादा बात करने और सीखने का एक स्वाभाविक तरीका है। यह उन्हें विचार करने और नए विचारों तथा भाषा को कार्यान्वित करने का अवसर देता है। यह छात्र–छात्राओं को नए कौशलों और संकल्पनाओं के माध्यम से काम करने और बड़ी कक्षाओं में भी अच्छा काम करने का सुविधाजनक तरीका प्रदान करता है।

जोड़े में कार्य करना सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयुक्त होता है। यह विशेष तौर पर बहुभाषी, बहुवर्गीय कक्षाओं में उपयोगी होता है, क्योंकि एक दूसरे की सहायता करने के लिए जोड़ों को बनाया जा सकता है। यह सर्वश्रेष्ठ तब काम करता है जब आप विशिष्ट कार्यों की योजना बनाते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित प्रक्रियाओं की स्थापना करते हैं कि

आपके सभी छात्र–छात्रा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल हैं और प्रगति कर रहे हैं। एक बार इन नियमित प्रक्रियाओं को स्थापित कर लिए जाने के बाद, आपको पता लगेगा कि छात्र–छात्रा तुरंत जोड़ों में काम करने के अभ्यस्त हो जाते हैं और इस तरह सीखने में आनंद लेते हैं।

जोड़े में कार्य करने के लिए कार्य

आप सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के अभीष्ट परिणाम के आधार पर विभिन्न प्रकार के कामों का जोड़े में कार्य करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। जोड़े में कार्य को अवश्य ही स्पष्ट और उपयुक्त होना चाहिए ताकि सीखने में अकेले काम करने के मुकाबले साथ मिलकर काम करने में अधिक मदद मिले। अपने विचारों के बारे में बात करके, आपके छात्र–छात्रा स्वचालित रूप से खुद को और विकसित करने के बारे में विचार करेंगे।

जोड़े में कार्य करने में शामिल हो सकते हैं:

- **'विचार करें-जोड़ी बनाए-साझा करें':** छात्र–छात्रा किसी समस्या या मुद्दे के बारे में खुद ही विचार करते हैं और फिर दूसरे छात्र–छात्राओं के साथ अपने उत्तर साझा करने से पूर्व संभावित उत्तर निकालने के लिए जोड़ों में कार्य करते हैं। इसका उपयोग वर्तनी, परिकलनों के जरिये कामकाज, प्रवर्गों या क्रम में चीजों को रखने, विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करने, कहानी आदि का पात्र होने का अभिनय करने आदि के लिए किया जा सकता है।
- **जानकारी साझा करना:** आधी कक्षा को विषय के एक पहलू के बारे में जानकारी दी जाती है; और शेष आधी कक्षा को विषय के भिन्न पहलू के बारे में जानकारी दी जाती है। फिर वे समस्या का हल निकालने के लिए या निर्णय करने के लिए अपनी जानकारी को साझा करने के लिए जोड़ो में कार्य करते हैं।
- **सुनने जैसे कौशलों का अभ्यास करना:** एक छात्र कहानी पढ़ सकता है और दूसरा प्रश्न पूछता है; एक छात्र अंग्रेजी में गद्यांश पढ़ सकता है, जबकि दूसरा इसे लिखने का प्रयास करता है; एक छात्र किसी तस्वीर या डायाग्राम का वर्णन कर सकता है जबकि दूसरा छात्र वर्णन के आधार पर इसे बनाने की कोशिश करता है।
- **निम्नलिखित निर्देश:** एक छात्र कार्य पूरा करने के लिए दूसरे छात्र हेतु निर्देश पढ़ सकता है।
- **कहानी सुनाना या भूमिका अदा (रोल प्ले) करना:** छात्र–छात्रा जो भाषा वे सीख रहे हैं, उसमें कहानी या संवाद बनाने के लिए जोड़ों में कार्य कर सकते हैं।

सभी को शामिल करते हुए जोड़ों का प्रबंधन करना

जोड़े में कार्य करने का अर्थ सभी को काम में शामिल करना है। चूंकि छात्र–छात्रा भिन्न–भिन्न होते हैं, इसलिए जोड़ों का प्रबंधन इस तरह से करना चाहिए कि हरेक को जानकारी हो कि उन्हें क्या करना है, वे क्या सीख रहे हैं और आपकी अपेक्षाएँ क्या हैं। अपनी कक्षा में जोड़े में कार्य को नियमित बनाने के लिए, आपको निम्नलिखित काम करने होंगे:

- उन जोड़ों का प्रबंधन करना जिनमें छात्र काम करते हैं। कभी-कभी छात्र मैत्री जोड़ों में काम करेंगे; कभी-कभी वे काम नहीं करेंगे। सुनिश्चित करें कि उन्हें बोध है कि आप उनके सीखने की प्रक्रिया को अधिकतम करने में सहायता करने के लिए जोड़ें तय करेंगे।
- अधिकतम चुनौती पेश करने के लिए, कभी-कभी आप मिश्रित योग्यता वाले और भिन्न भाषायी छात्र–छात्राओं के जोड़े बना सकते हैं ताकि वे एक दूसरे की मदद कर सकें; किसी समय आप एक स्तर पर काम करने वाले छात्र–छात्राओं के जोड़े बना सकते हैं।
- रिकॉर्ड रखें ताकि आपको अपने छात्र–छात्राओं की योग्यताओं का पता हो और आप उसके अनुसार उनके जोड़े बना सकें।
- आरंभ में, छात्र–छात्राओं को पारिवारिक और सामुदायिक संदर्भों से उदाहरण लेकर, जहाँ लोग सहयोग करते हैं, जोड़े में काम करने के फायदे बताएँ।
- आरंभिक कार्य को संक्षिप्त और स्पष्ट रखें।

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र–छात्रा के जोड़े ठीक वैसे ही काम कर रहे हैं जैसा आप चाहते हैं, उन पर नजर रखें।
- छात्र–छात्राओं को उनके जोड़े में उनकी भूमिकाएँ या जिम्मेदारियाँ प्रदान करें, जैसे कि किसी कहानी से दो पात्र, या साधारण लेबल जैसे '1' और '2', या 'क' और 'ख'। यह कार्य उनके एक दूसरे का सामना करने से पूर्व करें ताकि वे सुनें।
- सुनिश्चित करें कि छात्र–छात्रा एक दूसरे के सामने बैठने के लिए आसानी से मुड़ या घूम सकें।

जोड़े में कार्य के दौरान, छात्र–छात्राओं को बताएँ कि उनके पास प्रत्येक काम के लिए कितना समय है और उनकी नियमित जांच करते रहें। उन जोड़ों की प्रशंसा करें जो एक दूसरे की मदद करते हैं और काम पर बने रहते हैं। जोड़ों को आराम से बैठने और अपने खुद के हल ढूंढने का समय दें – छात्र–छात्राओं को विचार करने और अपनी योग्यता दिखाने से पूर्व ही जल्दी से उनके साथ शामिल होने का प्रलोभन हो सकता है। अधिकांश छात्र हरेक के बात करने और काम करने के वातावरण का आनंद लेते हैं। जब आप कक्षा में देखते हुए और सुनते हुए घूम रहे हों तो नोट करें कि कौन से छात्र एक साथ आराम में हैं हर उस छात्र–छात्रा के प्रति सचेत रहें जिसे शामिल नहीं किया गया है, और किसी भी सामान्य गलतियों, अच्छे विचारों या सारांश के बिंदुओं को नोट करें।

कार्य के समाप्त होने पर आपकी भूमिका उनके बीच की कड़ियाँ जोड़ने की है जिनको छात्र–छात्राओं ने बनाया है। आप कुछ जोड़ों का चुनाव उनका काम दिखाने के लिए कर सकते हैं, या आप उनके लिए इसका सार प्रस्तुत कर सकते हैं। छात्र–छात्राओं को एक साथ काम करने पर उपलब्धि की भावना का एहसास करना पसंद आता है। आपको हर जोड़े से रिपोर्ट लेने की जरूरत नहीं है – इसमें काफी समय लगेगा - लेकिन आप उन छात्र–छात्राओं का चयन करें जिनके बारे में आपको अपने अवलोकन से पता है कि वे कुछ सकारात्मक योगदान करने में सक्षम होंगे और जिससे दूसरों को सीखने को मिलेगा। यह उन छात्र–छात्राओं के लिए एक अवसर हो सकता है जो आमतौर पर अपना विश्वास कायम करने हेतु योगदान करने में संकोच करते हैं।

यदि आपने छात्र–छात्राओं को हल करने के लिए समस्या दी है, तो आप कोई उत्तर के नमूने भी दे सकते हैं और फिर उनसे जोड़ों में उत्तर में सुधार करने के संबंध में चर्चा करने के लिए कह सकते हैं। इससे अपने खुद के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के बारे में विचार करने और अपनी गलतियों से सीखने में उनकी सहायता होगी।

यदि आप जोड़े में कार्य करने के लिए नए हैं, तो उन बदलावों के संबंध में नोट बनाना महत्त्वपूर्ण है जिन्हें आप कार्य, समयावधि या जोड़ों के संयोजनों में करना चाहते हैं। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आप इसी तरह सीखेंगे और इसी तरह अपने अध्यापन में सुधार करेंगे। जोड़े में कार्य का सफल आयोजन करना स्पष्ट निर्देशों और उत्तम समय प्रबंधन के साथ-साथ संक्षिप्त सार संक्षेपण से जुड़ा है – यह सब अभ्यास से आता है।

अतिरिक्त संसाधन

- 'Book-talk' by Pie Corbett: http://webfronter.com/lewisham/primarycommunity/menu1/Writing/Talk_for_Writing/Booktalk_by_Pie_Corbett
- Booktrust is an independent UK reading and writing charity. It provides resources and tools to support professionals in helping both children and adults to develop in their reading and writing journey: http://www.booktrust.org.uk/
- NCERT books for children: http://www.ncert.nic.in/publication/children_books/children_books.html
- SCERT Books
- Pratham Books: http://www.prathambooks.org/

- 'Children's literature from India and the Indian diaspora', a post on Pratham Books' blog: http://blog.prathambooks.org/2010/10/childrens-literature-from-india-and.html
- Dasgupta, A. (1995) *Telling Tales: Children's Literature in India*. London: Taylor and Francis.
- A useful article about children's literature in India: http://isahitya.com/index.php/77-special-articles/269
- 'How to teach … reading for pleasure', from a UK website that contains some useful ideas and further links: http://www.theguardian.com/teacher-network/teacher-blog/2013/dec/16/reading-for-pleasure-reluctant-readers-schools-resources
- N'Namdi, K.A. (2005) *Guide to Teaching Reading at the Primary School Level*. Paris: UNESCO.
- *New Approaches to Literacy Learning* by V. Elaine Carter: http://unesdoc.unesco.org/images/0012/001257/125767eb.pdf

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Clark, C. and De Zoysa, S. (2011) *Mapping the Interrelationships of Reading Enjoyment, Attitudes, Behaviour and Attainment: An Exploratory Investigation*. London: National Literacy Trust.

Clark, C. and Poulton, L. (2011) *Is Four the Magic Number? Number of Books Read in a Month and Young People's Wider Reading Behaviour*. London: National Literacy Trust.

Clark, C. and Rumbold, K. (2006) *Reading for Pleasure: A Research Overview*. London: The National Literacy Trust.

Education World (undated) 'Book review form' (online). Available from: http://www.educationworld.com/a_lesson/template/book-review.shtml (accessed 23 October 2014).

Times of India (2014) 'Giant wheel a monumental treat' (online), 3 October. Available from: http://timesofindia.indiatimes.com/city/delhi/Giant-wheel-a-monumental-treat/articleshow/44155864.cms (accessed 23 October 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है, जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।